Integral Research (Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal) ISSN: 3048-5991
Journal home page: https://integralresearch.in/, Vol. 02, No. 08, August. 2025

भारत मे मुगलकालीन सामाजिक स्थिति एवं उसका मूल्यांकन

डॉ० अंशु मंगल *
शोधार्थी,
राधा गोविंद विश्वविद्यालय, रामगढ़, झारखंड

Abstract

मुगलकालीन भारत का सामाजिक, आर्थिक और साहित्यिक परिदृश्य बहुआयामी एवं गतिशील था। मुस्लिम शासन की स्थापना के साथ भारतीय समाज में सांस्कृतिक समन्वय की नई प्रक्रिया आरम्भ हुई, जिसके परिणामस्वरूप समाज मुख्यतः उच्च, मध्यम और निम्न वर्गों में विभक्त दिखाई देता है। उच्च वर्ग में अमीर, सामन्त एवं राजकीय पदाधिकारी सम्मिलित थे, जिनका जीवन ऐश्वर्यपूर्ण था; मध्यम वर्ग में व्यापारी, कर्मचारी और कलाकार आते थे; जबकि निम्न वर्ग में किसान, मजदूर और कारीगर शामिल थे, जिनकी स्थिति अपेक्षाकृत दयनीय थी। स्त्रियों की स्थिति वर्ग, धर्म और परंपराओं के अनुसार भिन्न थी–जहाँ एक ओर पर्दा, बाल विवाह, सती और दहेज जैसी प्रथाएँ प्रचलित थीं, वहीं दूसरी ओर कुछ उच्चवर्गीय महिलाएँ शिक्षा और साहित्य में सक्रिय रहीं। आर्थिक दृष्टि से मुगलकालीन व्यवस्था मुख्यतः कृषि-आधारित थी, परन्तु उद्योग, शिल्प और आंतरिक तथा वैदेशिक व्यापार भी अत्यंत विकसित अवस्था में थे। वस्त्र उद्योग विशेष रूप से उन्नत था और भारत के प्रमुख बंदरगाहों से व्यापक समुद्री व्यापार संचालित होता था। साहित्य एवं कला के क्षेत्र में भी इस काल में उल्लेखनीय प्रगति हुई। बाबर से लेकर शाहजहाँ तक अधिकांश मुगल शासकों ने विभिन्न भाषाओं–विशेषतः फारसी और हिन्दी–के साहित्य को संरक्षण प्रदान किया। ऐतिहासिक ग्रन्थों, अनुवाद-परियोजनाओं तथा भक्ति साहित्य की रचनाओं ने इस युग को सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध बनाया। इस प्रकार मुगलकाल भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण कालखंड सिद्ध होता है, जिसमें सामाजिक संरचना, आर्थिक विकास और साहित्यिक उन्नति का समन्वित स्वरूप दृष्टिगोचर होता है।

Keywords: मुगलकाल, सामाजिक संरचना, आर्थिक व्यवस्था, साहित्यिक उन्नति, भक्ति आंदोलन

मुसलमानों के आगमन तथा उनके यहाँ पर शासन स्थापित करने के साथ ही भारत में एक नई संस्कृति व सभ्यता का सूत्रपात हुआ और भारतीय समाज दो वर्गों में विभक्त हो गया (1) हिंदू समाज, (2) मुस्लिम समाज। इन दोनों वर्गों के जीवन स्तर में पर्याप्त भिन्नता थी। इसके अतिरिक्त प्रत्येक वर्ग में अपने ही वर्ग के भीतर विभेद उत्पन्न हो गये थे। मुगलकाल

* Corresponding Author: **Dr. Anshu Mangal**
Email: dranshumangal@gmail.com
Received 08 July. 2025; Accepted 25 August. 2025. Available online: 30 August. 2025.
Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

में यह वर्ग विभेद धन, सम्पत्ति एवं विशेषाधिकार के कारण और भी अधिक बढ़ गया था।1 अबुल फजल की आइन-ए-अकबरी, निजामुद्दीन अहमद की तबकाते अकबरी' और सर टॉमस रो, पेलसर्ट, डेलावेले, बर्नियर, टवर्नियर जैसे विदेशी यात्रियों तथा अन्य समसामयिक ग्रन्थों से प्राप्त विवरणों के आधार ज्ञात होता है कि मुगलकाल में भारत का सामाजिक संगठन मुख्यतः तीन वर्गों में विभक्त था: उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग तथा निम्न वर्ग।

उच्च वर्ग

मुगलकाल में सम्राट् के पश्चात् समाज के उच्च वर्ग के अंतर्गत अमीर, सामन्त और उच्च पदों पर आसीन पदाधिकारी आते थे। इस वर्ग के लोगों की आर्थिक स्थिति काफी मजबूत होती थी। इस वर्ग के लोगों का जीवन सरस्तर अत्यन्त ऊँचा था, अतः ये लोग विलासिता एवं आमोद-प्रमोद से परिपूर्ण जीवन व्यतीत करते थे।2 इस वर्ग के लोग साधारण लोगों को निम्न दृष्टि से देखते थे। मुगल अमीरों के रहन-सहन के विषय में सर यदुनाथ सरकार ने लिखा है, "मुगल अमीरों का रहन-सहन ऐसा ऐश्वर्य और सुखपूर्ण था, जिसका ईरान के स्वयं शाह या मध्य एशिया के सुल्तान सपना भी नहीं देख सकते है।"

मध्यम वर्ग

मुगलकाल में मध्यम वर्ग के अन्तर्गत व्यापारी, राजकीय कर्मचारी, चिकित्सक तथा विभिन्न विधाओं में पारंगत कलाकार आदि आते थे। इस वर्ग के लोगों का जीवन स्तर अधिक उच्च नहीं था। इस वर्ग के लोगों के विषय में विद्वान् लेखक डॉ॰ रमेशचन्द्र मजूमदार ने लिखा है,'अमीरों के नीचे एक छोटा तथा मितव्ययी मध्यम वर्ग था, जो प्रदर्शन के लिए धन व्यय नहीं करता था।

निम्न वर्ग

निम्न वर्ग के अन्तर्गत किसान, मजदूर तथा कारीगर आदि आते थे। इस वर्ग के लोगों का जीवन सरल तथा संघर्षमय था। इस वर्ग के लोगों की आय भी अल्प थी जिसके कारण उनका जीवन स्तर भी निम्नकोटि का था। इस वर्ग के लोगों की दयनीय स्थिति का वर्णन करते हुए

डॉ यदुनाथ सरकार ने लिखा है, "श्रमिकों को बहुत कम वेतन मिलता था, सामन्त तथा राजकीय पदाधिकारी वर्ग उनका शोषण करता था। कठिन परिश्रम के बाद भी इनको बहुत कम मजदूरी मिलती थी अथवा कुछ भी नहीं मिलता था। भोजन में इनको खिचड़ी के अतिरिक्त कुछ भी नहीं मिलता था। इनके घर मिट्टी के बने होते हैं, उनके पास कुछ मिट्टी के बर्तनों तथा घास-फूस के अतिरिक्त कुछ भी न था।"4

स्त्रियों की दशा

मुगलकाल में मुस्लिम स्त्रियों की दशा अच्छी नहीं थी। मुगलकाल में मुसलमानों में बहुपत्नी प्रथा प्रचलित थी। मुसलमान व्यक्ति चार पत्नियाँ तक रख सकता था। मुस्लिम महिलाओं के द्वारा पर्दा प्रथा का कड़ाई से पालन किया जा था। हिंदू महिलाओं की अपेक्षा मुस्लिम महिलाओं की आर्थिक स्थिति मजबूत होती थी, क्योंकि शरियत कानून के अनुसार मुस्लिम महिलाएँ अपने पिता की सम्पत्ति में हिस्सेदार होती थीं। राजपूत काल की भाँति मुगल काल में भी कन्या का जन्म पुत्र के जन्म की तुलना में सही नहीं माना जाता था। इस्लाम के प्रभाव के कारण हिंदू महिलाओं में भी पर्दा प्रथा प्रारम्भ हो गई थी। हिंदूओं में बाल विवाह का भी प्रचलन था। उस समय हिंदूओं में दहेज प्रथा भी प्रचलित थी। हिंदूओं में सती प्रथा तथा जौहर प्रथा भी प्रचलित थी।5

मुगलकाल में उच्च वर्ग की स्त्रियाँ विदुषी थीं, वे कला तथा साहित्य में विशेष अनुराग रखती थीं। मीराबाई, नूरजहाँ, जैबुन्निसा तथा गुलबदन बेगम आदि इस काल की विदूषी स्त्रियाँ थीं।

दास प्रथा

मुगल काल में दास प्रथा का अस्तित्व बना हुआ था। हिंदू व मुस्लिम शासक एवं अभिजात्य वर्ग में दास व दासियों को रखा जाता था। स्त्री दासियाँ घरेलू कार्यों के लिए रखी जाती थीं। युद्ध में बंदी बनाए गए पुरुषों से दास का कार्य लिया जाता था, लेकिन इस काल में सल्तनत काल की भाँति किसी भी दास की उन्नति का कोई उदाहरण नहीं मिलता है।

मुगलकालीन आर्थिक स्थिति

मुगलकालीन अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित थी। मुगल काल की अधिकांश जनता कृषि पर निर्भर थी। कृषि विकास की दृष्टि से भारत आत्मनिर्भर था। मुगल सम्राट् अकबर ने कृषि विकास पर विशेष ध्यान दिया तथा अपने सूबेदारों को निर्देश जारी किये थे कि वे कुएँ, तालाब तथा नहरों की समुचित व्यवस्था करें, परंतु औरंगजेब तथा उसके पश्चात् के मुगल शासकों ने कृषि विकास की ओर अधिक ध्यान नहीं दिया। मुगलकाल में विभिन्न उद्योग-धन्धों का विकास भी अभूतपूर्व हुआ।6 इस काल में कुछ उद्योगों का संचालन राज्य द्वारा किया जाता था, तो कुछ का संचालन धनवान लोग करते थे। अकबर के शासनकाल में 36 कारखाने थे] जिनमें विभिन्न वस्तुओं का निर्माण होता था, वस्त्र उद्योग मुगलकाल में सबसे अधिक प्रगति पर था। गाँवों तथा नगरों में सूती वस्त्र विशाल मात्रा में तैयार किये जाते थे। आगरा, वाराणसी, जौनपुर, पटना, लखनऊ तथा मुर्शिदाबाद सूती वस्त्र निर्माण के प्रमुख केन्द्र थे। इसके अतिरिक्त ढाका मलमल के निर्माण के लिए प्रसिद था।

इस काल में देशी तथा वैदेशिक दोनों प्रकार के व्यापार का प्रचलन था। व्यापार जल तथा थल दोनों मार्गों से होता था। भारत से श्रीलंका, वर्मा, चीन, जापान, इंडोनेशिया, नेपाल, ईरान, मध्य एशिया, अरब तथा अफ्रीका के देशों के साथ अच्छा व्यापार होता था। डच, फ्रांसिसी तथा अंग्रेज व्यापारी भारत का माल यूरोप के बाजारों में पहुँचाते थे। सूती, ऊनी तथा रेशमी वस्त्र, नील, सोडा, मसाले, चीनी, नमक आदि भारी मात्रा में बाहर भेजे जाते थे। सूरत, भड़ौच, बसई, गोवा, कालीकट, कोचीन तथा मछलीपट्टनम आदि भारत के अच्छे बंदरगाह थे। इस काल में वैदेशिक व्यापार के साथ-साथ आन्तरिक व्यापार भी उन्नत अवस्था में था।7

मुगलकालीन साहित्य

मुगलकाल में साहित्य और ललित-कलाओं की अभूतपर्व उन्नति हुई थी। स्थापत्य कला के क्षेत्र में तो इतनी सुन्दर और भव्य इमारतों का निर्माण हुआ था कि यह युग सम्पूर्ण भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। औरंगजेब के अतिरिक्त सभी मुगल शासकों के

काल में विभिन्न भाषाओं के साहित्य की पर्याप्त उन्नति हुई। सभी मुगल शासकों ने हिन्दी, फारसी और संस्क`त के विभिन्न साहित्यकारो को अपने दरबार में आश्रय प्रदान किया था।8

(1) बाबर और हुमायूँ के शासनकाल में साहित्य की उन्नतिμबाबर स्वयं एक अच्छा विद्वान था। वह उच्च कोटि का कवि और लेखक भी था। उसने अपनी आत्मकथा "तुजुक-ए-बाबरी" तुर्की भाषा में लिखी थी। उसकी पुत्री गुलबदन बेगम ने भी "हुमायँनामा" नामक ग्रन्थ की रचना की थी।

हुमायूँ भी अपने पिता के समान साहित्य का संरक्षक था। उसके समय में "मिर्जा हैदर" ने "तीरीख-ए-रशीदी" और जौहर ने "तजकिरातुल वाक्यात" नामक उत्कृष्ट ग्रन्थों की रचना की थी।

(2) अकबर के शासनकाल में साहित्य की उन्नति: अकबर स्वयं शिक्षित नहीं था, किन्तु साहित्य की उन्नति में उसने निम्नांकित प्रकार से पर्याप्त योगदान दिया था:

(I) अनूदित ग्रन्थ: उसने अनेक भाषाओं के विभिन्न ग्रन्थों रामायण, अथर्ववेद, लीलावती, का फारसी में अनुवाद करवाया। उसके दरबार में अब्दुर्रहीम खानखाना, बदायूँनी, फैजी जैसे अनेक विद्वान् और उच्चकोटि के अनुवादक थे।

(ii) फारसी भाषा में ग्रन्थों की रचना: अकबर के समय फारसी भाषाओं में भी कई अद्वितीय ग्रन्थों की रचना हुई। इस काल के प्रसिद्ध फारसी कवि गिजाली, उर्फी और फैजी थे।9

(III) ऐतिहासिक ग्रन्थों की रचना: अकबर के शासनकाल में अकबरनामा, आइने-अकबरी (अबुल फजलद्ध, मुन्तखब-उत-तवारीख, अब्दुल कादिर बदायूँनी), तारीफ-ए-अल्फी (मुल्ला दाउद) एवं तबकात-ए-अकबरी (निजामुद्दीन अहमद) आदि ऐतिहासिक ग्रन्थों की रचना हुई थी।

(IV) हिन्दी काव्य साहित्य : अकबर के समकालीन दो हिन्दी कवियोंμतुलसीदास और सूरदास का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इनका अकबर के दरबार से कोई सम्बन्ध नहीं था परन्तु इनके द्वारा रचित हिन्दी काव्य के ग्रन्थ आज भी विश्व की अमूल्य निधियाँ हैं। एक विद्वान्

ने तो यहाँ तक लिखा है कि : "तुलसीदास के साहित्य के आधार पर ही इस काल को स्वर्ण-युग कहा जा सकता है।"10

(3) जहाँगीर के शासनकाल में साहित्य की उन्नति: जहाँगीर भी साहित्य का विशेष प्रेमी था। उसने स्वयं अपनी आत्मकथा "तुजुके जहाँगीरी" लिखी थी। उसके समय में ग्यासबेग, नकीब खाँ, अब्दुल हक देहलवी जैसे अनेक विद्वान् हुए। इस काल में अनेक ऐतिहासिक ग्रन्थ भी लिखे गए। इनमें इकबालनामा-ए-जहाँगीरी (मोतमिद) विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

(4) शाहजहाँ के शासनकाल में साहित्य की उन्नति : शाहजहाँ एक शिक्षित एवं विद्वान् सम्राट् था। वह विद्वानों को पर्याप्त सम्मान देता था। इसके काल में अनेक ग्रन्थों के अनुवाद, मौलिक ऐतिहासिक ग्रन्थों की रचना तथा विविध प्रकार के साहित्य की रचना हुई। इस काल के प्रमुख ग्रन्थों में बादशाहनामा (अब्दुल हमीद लाहौरी), बादशाहनामा (अमीन काजवीनी) और शाहजहाँनामा (इनायत खाँ) विशेष रूप से उल्लेखनीय है। शाहजहाँ का पुत्र दारा शिकोह प्रकाण्ड विद्वान् था। उसने भी अनेक ग्रन्थों की रचना की थी।11

(5) औरंगजेब के शासनकाल में साहित्य की उन्नति : औरगंजेब फारसी का विद्वान् था, किन्तु उसने साहित्य अभिवृद्धि की ओर कोई रुचि नहीं दिखाई तथापि कुछ लोगों ने उसके समय में लेखन कार्य अवश्य किया। औरगंजेब के काल के ऐतिहासिक ग्रन्थों में फतवा-ए-आलमगीरी, मुन्तखब-उल-लुवाब (खफी खाँ), मासीरे आलमगीरी, खुलासत-उत-तवारीख विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।12

(6) हिन्दी साहित्य का विकास: मुगलकाल में हिन्दी साहित्य का भी पर्याप्त उन्नति हुई। विशेषकर भक्ति आन्दोलन के परिणामस्वरूप हिन्दी साहित्य प्रगति की ओर अग्रसर हुआ। 1540 ई॰ में हिन्दी के महत्वपूर्ण ग्रन्थ पद्मावत की रचना मलिक मुहम्मद जायसी के कर-कमलों से हुई। इसमें जायसी ने श्रृगार रस में मेवाड़ की रानी पदमिनी का नखशिख वर्णन किया है। बीरबल, अब्दुर्रहीम खानखाना आदि विद्वान् एवं कवियों ने भी हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में अभिवृद्धि की।13

मुगलकाल में ही भक्ति आन्दोलन हुआ, जिसके कारण सूर, तुलसी, रसखान आदि कवियों न धर्म और समाज सुधार पर आधारित विभिन्न ग्रन्थों की रचना की। तुलसी की रचना श्रीरामचरितमानस आज भी आदर से देखी जाती है।14 केशव नामक विद्वान् कवि ने हिन्दी भाषा में रामचन्द्रिका, कविप्रिया, रसिकप्रिया आदि विशिष्ट ग्रन्थों की रचना की। बिहारी ने बिहारी सतसई लिखी, जो हिन्दी साहित्य में अपना अद्वितीय स्थान रखती है।

साहित्य के क्षेत्र में मुगलकाल की उपर्युक्त प्रगति को देखते हुए यह कथन सर्वथा उपयुक्त ही प्रतीत होता है कि, "मुगलकाल हिन्दी साहित्य के विकास के लिए सर्वश्रेष्ठ तथा प्रसिद्ध युग था।" 13

सन्दर्भ ग्रन्थ:

1. मध्यकालीन भारत को वृहत् इतिहास खण्ड-1 (1000-1526 ई.)- जे.एल. मेहता, पृष्ट संख्या 45, पुर्न मुद्रित संस्करणः 2020

2. वही, पृ.सं. 45

3. वही, पृ. सं. 46

4. वही, पृ. सं. 9

5. मध्यकालीन भारतीय संस्कृतिः डॉ . के. एल. खुराना, पृ. सं. 8

6. मध्यकालीन भारतः हरिषचन्द्र वर्मा, भाग-1, पृ. सं.- 2

7. वही,

8. वही,

9. मध्यकालीन भारतीय संस्कृतिः डॉ. के. एल. खुराना, पृ.सं. 8

10. वही, पृ. सं.-9

11. वही, पृ. सं.- 10

12. मध्यकालीन भारत का वृहत् इतिहासः जे.एल. मेहता (खण्ड-1), पृ.सं. 352

13. जजिया कर गरीब से 12, मध्यम से 14 तथा धनी से 48 चाँदी के सिक्के प्रति वर्ष लिया जाता था। भिखारी, बालक, अपाहिज एवं ब्राह्मण इस कर से मुक्त थे परन्तु फिरोज तुगलक ने ब्राह्मणों पर भी इसे लागू किया।